SC-101, SEM-1, Page-2
Dr. S.B. Choudhary

कहने का तात्पर्य यह है कि यथार्थवादियों ने वस्तु द्वारा शिक्षा देने की पद्धति पर बल दिया। इससे दृश्य-श्रव्य साधनों का प्रयोग आरम्भ हो गया।

प्रसिद्ध यथार्थवादी बेकन (Bacon) ने आगमन-विधि (Inductive Method) को जन्म दिया। इस पद्धति द्वारा बालक को पहले वस्तु तत्पश्चात् शब्द का ज्ञान कराया जाता था। साथ ही इसमें बालक को स्वयं अपने निरीक्षण, परीक्षण, निर्णय द्वारा सीखने का अवसर प्राप्त होता था। इस पद्धति के कारण अरस्तू की निगमन पद्धति का महत्व कम हो गया।

यथार्थवादी दार्शनिक मिल्टन (Milton) ने यात्रा द्वारा शिक्षा (Learning by Travelling) पर बल दिया। साथ ही जॉनलॉक (JohnLocke) ने बताया कि सीखने की क्रिया में निरीक्षण, देशाटन, प्रयोग तथा अनुभव का गहरा हाथ होना चाहिये।

यथार्थवादियों ने कई शिक्षण सूत्र भी प्रस्तुत किये। ये शिक्षण सूत्र पुस्तकीय पाठन-प्रणाली तथा रटने के स्थान पर सीखने (Learning by Doing) एवं स्वानुभव द्वारा सीखने (Learning by Experience) पर बल देते हैं। यथार्थवादियों ने ज्ञान को एक इकाई माना तथा सह-सम्बन्ध विधि (Correlation) का समर्थन किया।

यथार्थवाद तथा शिक्षक
(Realism and Teacher)

यथार्थवाद के अनुसार शिक्षक का स्थान इतने महत्त्व एवं गौरव का तो नहीं है जितना आदर्शवादी दर्शन के अनुसार है। फिर भी यथार्थवादी शिक्षक का स्थान इतना महत्वहीन अथवा गौण भी नहीं जितना प्रकृतिवादी दर्शन के अनुसार है। वस्तु स्थिति यह है कि यथार्थवाद के समर्थक शिक्षक से यह आशा करते हैं कि उसे विषय–वस्तु तथा यथार्थवादी बालक की आवश्यकताओं का पूरा ज्ञान होना चाहिये। यही नहीं, उसमें इतनी क्षमता भी अवश्य होनी चाहिये कि वह विषय–वस्तु अथवा खोजे हुए ज्ञान को वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक विधि द्वारा स्पष्ट रूप से बालक के समक्ष प्रस्तुत कर सके। यथार्थवादियों के अनुसार शिक्षक का यह कर्तव्य है कि ...
स्वयं किसी ...